

---

# Gayatri Ashtakam

---

## गायत्री अष्टकम् वा स्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Gayatri Ashtakam 2

File name : gAyatrI\_aShTakam.itx

Category : aShTaka, devii, gAyatrI, devI

Location : doc\_devii

Author : Traditional

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Source : Gayatri Mahavijnana -Pandit Rama Sharma Acharya,

Latest update : December 31, 2020

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

गायत्री अष्टकम् वा स्तोत्रम्



गायत्र्यष्टकम्

सुकल्याणीं वाणीं सुरमुनिवरैः पूजितपदाम्  
शिवामाद्यां वन्द्यां त्रिभुवनमयीं वेदजननीम् ।  
परं शक्तिं स्रष्टुं विविधविध रूपां गुणमयीं  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ १ ॥

विशुद्धां सत्त्वस्थामखिल दुरवस्थादिहरणीं  
निराकारां सारां सुविमल तपो मूर्तिमतुलाम् ।  
जगज्ज्येष्ठां श्रेष्ठामसुरसुरपूज्यां श्रुतिनुतां  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ २ ॥

तपो निष्ठाभीष्टांस्वजनमनसन्तापशमनीं  
दयामूर्तिं स्फूर्तिं यतितति प्रसादैकसुलभाम् ।  
वरेण्यां पुण्यां तां निखिल भव बन्धापहरणीं  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ३ ॥

सदाराध्यां साध्यां सुमति मति विस्तारकरणीं  
विशोकामालोकां हृदयगत मोहान्धहरणीम् ।  
परां दिव्यां भव्यामगमभवसिन्ध्वेक तरणीं  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ४ ॥

अजां द्वैतां त्रैतां विविधगुणरूपां सुविमलां  
तमो हन्त्री-तन्त्रीं श्रुति मधुरनादां रसमयीम् ।  
महामान्यां धन्यां सततकरुणाशील विभवां  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ५ ॥

जगद्धात्रीं पात्रीं सकल भव संहारकरणीं  
सुवीरां धीरां तां सुविमल तपो राशि सरणीम् ।  
अनेकामेकां वै त्रिजगसदधिष्ठानपदवीं

भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ६ ॥

प्रबुद्धां बुद्धां तां स्वजनमति जाड्यापहरणां  
हिरण्यां गुण्यां तां सुकविजन गीतां सुनिपुणीम् ।  
सुविद्यां निरवद्याममल गुणगाथां भगवतीं  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ७ ॥

अनन्तां शान्तां यां भजति बुध वृन्दः श्रुतिमयीं  
सुगेयां ध्येयां यां स्मरति हृदि नित्यं सुरपतिः ।  
सदा भक्त्या शक्त्या प्रणतमतिभिः प्रीतिवशगां  
भजेऽम्बां गायत्रीं परमसुभगानन्दजननीम् ॥ ८ ॥

शुद्ध चित्तः पठेद्यस्तु गायत्र्या अष्टकं शुभम् ।  
अहो भाग्यो भवेल्लोके तस्मिन् माता प्रसीदति ॥ ९ ॥  
इति गायत्र्यष्टकं अथवा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

---



*Gayatri Ashtakam*

pdf was typeset on December 31, 2020



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

